Toppersnotes®
Unleash the topper in you

बिहार पुलिस

सब इंस्पेक्टर/ दरोगा

बिहार पुलिस अधीनस्थ सेवा आयोग (BPSSC)

भाग - 4

समान्य हिन्दी एवं सामान्य विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

BIHAR POLICE S.I.

क्र.सं.	अध्याय हिन्दी	पृष्ठ सं.
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	3
3.	विशेषण	4
4.	क्रिया	5
5.	काल	12
6.	अव्यय/अविकारी शब्द	14
7.	कारक	18
8.	तत्सम - तद्भव	21
9.	विलोम – शब्द	23
10.	पर्यायवाची	29
11.	शब्द युग्म	31
12.	संधि	41
13.	उपसर्ग	57
14.	प्रत्यय	67
15.	समास	75
16.	वर्तनी शुद्धि	81
17.	शुद्ध–वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	84
18.	मुहावरे	95
19.	लोकोक्ति	101
20.	रस	104
21.	छन्द	107
22.	अंलकार	115
23.	वाक्य के लिए एक शब्द	120
24.	अपठित गद्यांश	126
25.	रचना एवं रचनाकार	137
26.	हिन्दी भाषा में पुरस्कार	145

विज्ञान

1.	भौतिक राशियाँ	150
2.	बल एवं गति	152
3.	गुरूत्वाकर्षण	153
4.	कार्य, ऊर्जा एवं शक्ति	166
5.	ताप एवं तापमापी	171
6.	ऊष्मा	172
7.	ऊष्मागतिकी	175
8.	प्रकाश	177
9.	विद्युत धारा	189
10.	चुम्बकत्व	194
11.	परमाणु भौतिकी	199
12.	इलेक्ट्रॉनिक्स	200
13.	संचार प्रणाली	201

रसायन विज्ञान

1.	द्रव्य	203
2.	भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन	212
3.	धातु, अधातु एवं इनके प्रमुख यौगिक	213
4.	पदार्थ की भौतिक अवस्थाओं का अन्तः परिवर्तन	222
5.	परमाणु संरचना	222
6.	आवर्त सारणी	228
7.	रासायनिक बन्ध	231
8.	रासायनिक अभिक्रिया एवं समीकरण	233
9.	अम्ल, क्षार एवं लवण	237
10.	विलयन	240

11.	**pH**	242
12.	बहुलक (पॉलीमर)	245
13.	कार्बन एवं हाइड्रोकार्बन	250
14.	ईंधन	258
15.	मानव जीवन में रसायन	260

जीव विज्ञान

1.	जीव जगत (परिचय एवं वर्गीकरण)	269
	• मोनेरा	270
	• प्रोटिस्टा	270
	• कवक	270
	• सूक्ष्म जीव (जीवाणु, विषाणु)	272
	• पादप जगत	274
	• जन्तु जगत	276
2.	कोशिका	279
3.	जन्तु ऊतक	285
4.	पाचन तंत्र	286
5.	पोषण	289
6.	रक्त, रक्त समूह एवं **Rh** कारक	292
7.	परिसंचरण तंत्र	296
8.	हार्मोन्स (अंतःस्त्रावी तंत्र)	299
9.	तंत्रिका तंत्र	305
10.	कंकाल तंत्र	308
11.	उत्सर्जन तंत्र	310
12.	प्रजनन तंत्र	312
13.	श्वसन तंत्र	314
14.	मानव रोग	318
15.	आनुवांशिकी	323

16. जैव प्रौद्योगिकी 329

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

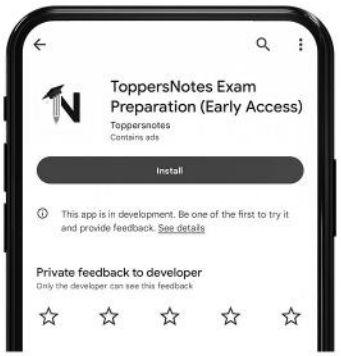

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

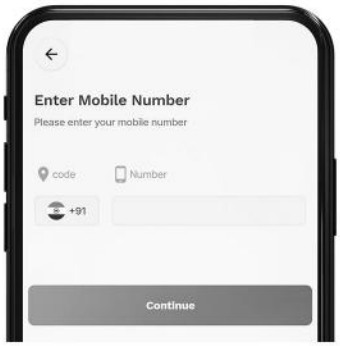

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

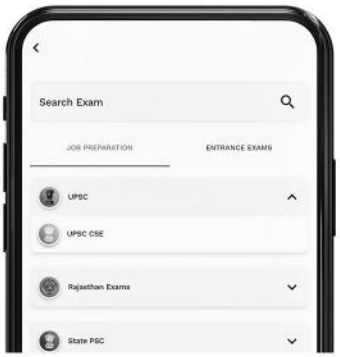

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

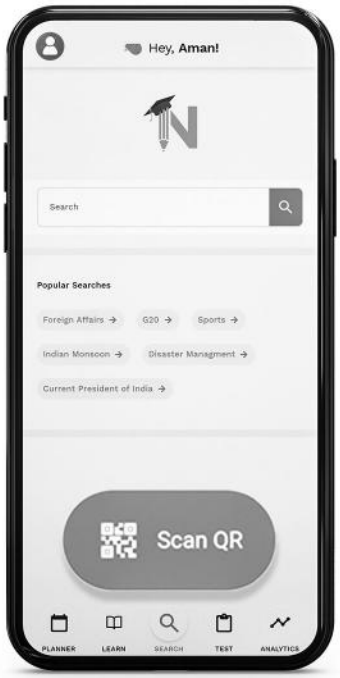

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

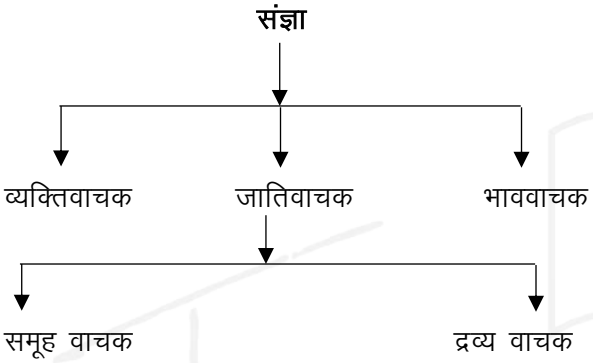

1.व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2.जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3.भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता

गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन

- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

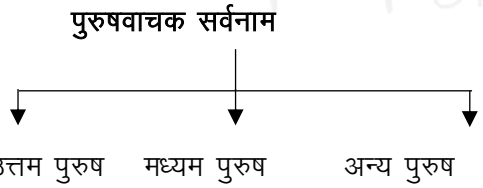

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह
दूर की वस्तु के लिए – वह

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
- रमन को कोई बुला रहा है।
- दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने
वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।

(i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

(ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।

(iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

विशेषण

परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है ।
यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका
किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –

(i) अंकित कैसा लडका है ?
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।

(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।
जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लड़का, पुराना मकान आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते है उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है ।
जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते है।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते है वे अवश्य अपनी मंजिल पाते है।

विशेषण के अन्य भेद

(i) व्यक्तिवाचक विशेषण
(ii) भिन्नतावाचक विशेषण

विशेषण की अवस्थाएँ – 3 होती है।

(i) **मूलावस्था** – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।
जैसे – अतुल एक अच्छा लड़का है।

(ii) **उत्तरावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थो की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।
जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।
(ii) मानसी पटुतर लड़की है।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुडा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) **उत्तमावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थो में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान – जब विषेशण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।
जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते है, वे प्रविशेषण कहलाते है।
जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

क्रिया

- वाक्य में जिस शब्द या शब्द–समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसे – खाना, पीना, पढना, सोना, जाना।

- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता हैं। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

- **धातु** – हिंदी क्रिया पदो का मूल रूप ही 'धातु' है। धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते है।

  जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।

  - मोहन खाना खा रहा है।
  - हवा बह रही है। (करना–हवा बहने की क्रिया कर रही है।)
  - पुस्तक अलमारी में है। (होना)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है।

क्रिया के भेद

- **कर्म के आधार पर**
  - अकर्मक क्रिया
  - सकर्मक क्रिया
- **संरचना के आधार पर**
  - प्रेरणार्थक क्रिया
  - नामधातु क्रिया
  - पूर्वकालिक क्रिया
  - तात्कालिक क्रिया
  - संयुक्त क्रिया
  - कृदन्त क्रिया
- **काल के आधार पर**
  - भूतकालिक क्रिया
  - वर्तमान कालिक क्रिया
  - भविष्यत् कालिक क्रिया

वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद

अकर्मक और सकर्मक क्रिया – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है – सकर्मक और अकर्मक।

(क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसे –

- रमा सोती है।
- नरेश दौड रहा है।
- चिड़िया उड़ रही है।
- बच्चा रोता है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'सोती है', 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता–पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है।

अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता हैं।

(i) अपूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती हैं। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

नोट – लगना, होना, निकलना ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

जैसे –

- भेड़ प्यासी थी। – होना
- मैं एक छात्र हूँ। – होना
- वह बड़ा ईमानदार निकला। – लगना, निकलना
- वह डरावना लगता हैं। – लगना, निकलना

(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा हैं।
- तोता आसमान में उड़ता हैं।

नोट – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है। सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे –

1. राम पत्र लिखता है।
2. लडके ने बेर खाए।
3. मोहित पानी पीता है।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है। सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई–न–कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है? (पत्र), लडके ने क्या खाए? (बेर), मोहित ने क्या पिया? (पानी)।

(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती हैं, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

जैसे –

- हमने उसे सरपंच **बनाया**।
- मैं उसे बहिन **मानता हूँ**।
- हम उसे ईमानदार **समझते हैं**।

पहचान – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती हैं, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती हैं।

जैसे –

- बच्चा खेल रहा हैं। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

पहचान – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले **क्या** शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता हैं, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।

(i) एक कर्मक क्रिया
(ii) द्वि कर्मक क्रिया

(i) एक कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा हैं।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे।
- मैनें गाड़ी खरीदी।

} कर्म खरीदना

पहचान – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने–आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे–

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है। ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे। (गुरु–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे

पूर्णता नही आती। ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है।

पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया–पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर–क्रियापद (संज्ञा–विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे–

1. लडका सोता है।
2. लडका पढता है।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है। ये दोनो पद क्रियापद ही है। अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है।

(ii) द्वि कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

पहचान – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त किया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

ध्यान देने योग्य बातें – हिंदी में निम्न **सोलह क्रियाएँ** ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता हैं।

1.	दुहना	2.	माँगना
3.	पकाना	4.	सजा देना
5.	रोकना	6.	पूँछना
7.	चुनना	8.	कहना
9.	उपदेश देना	10.	जीतना
11.	मथना	12.	चुराना
13.	ले जाना	14.	हरण करना
15.	खिंचना	16.	ढ़ोना

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है। सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

नोट – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक किया हैं।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मै गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था। (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नाम धातु क्रिया होती है। जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया। (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

हाथ (संज्ञा) – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)
अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)
जैसे – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका हैं।

संज्ञा से निर्मित नामधातु

हाथ – हथियाना
लाज – लज्जाना
बात – बतियाना
लात – लतियाना
रंग – रंगना
शर्म – शर्माना

सर्वनाम से निर्मित नामधातु

अपना – अपनाना

विशेषण से निर्मित नामधातु

ठण्डा – ठण्डाना
साठ – सठियाना
गर्म – गर्माना

पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– सोकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सो गए।
  (सोने से पहले दूध पीया।)

- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनों क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है।

तात्कालिक क्रिया

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है। संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा।
- दीक्षा लिखा करती होगी।
- पानी बरसने लगा है।
- मै यहाँ रोज आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते है।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

कृदन्त क्रिया – क्रिया शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्यय के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती हैं।

क्रिया	–	**कृदन्त क्रिया**
लिख	–	लिखना, लिखता, लिखकर
चल	–	चलना, चलता, चलकर

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –
जैसे – पेड से पत्ता गिर रहा है।
बूंद–बूंद से घडा भरता है।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) का प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है।
जैसे – बच्चा घर गया।
वह स्कूल आ रही है।

काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती हैं, उसके अनुसार क्रिया के **तीन भेद** हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

1. **भूतकालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
   - वह विद्यालय चला गया।
   - उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

2. **वर्तमान कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
   - अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
   - अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
   - सुमित खाना खा रहा हैं।

3. **भविष्यत् कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता हैं, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे –
   - रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
   - हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
   - कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

अन्य क्रियाएँ

1. **सामान्य क्रिया** – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राकेश दिल्ली गया।
- सुमन खाना बनाएगी।
- रेखा ने गीत गाया।

2. सजातीय क्रियाएँ – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता हैं, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।

अर्थात् – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राजू कई **खेल–खेलता हैं।**
- सीता मधुर **हँसी–हँसती** हैं।
- कृष्ण अच्छी **चाल–चलता** हैं।

3. अनुकरणात्मक क्रिया – किसी ध्वनि (आवाज/बोली) के अनुकरण पर जो क्रिया बनती हैं, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- बकरी की आवाज – में–में से मिमियाना
- तोते की आवाज – टें–टें से टिटियाना
- हवा की आवाज – सन–सन से सनसनाना

पक्षियों की आवाजें

कूकना (कू–कू)	–	कोयल
रँभाना	–	गाय
कुकडूँ–कुकडूँ	–	मुर्गा
डकारना	–	साँड
गुटरगूँ	–	कबूतर
खोखियाना	–	भालू
काँव–काँव	–	कौआ
हिनहिनाना	–	घोड़ा
भिन्न–भिन्नाना	–	मक्खी
भौंकना	–	कुत्ता
झंकरना (झीं–झीं)	–	झींगुर
दहाड़ना	–	शेर
गुनगुनाना	–	भंवरा
चिंघाड़ना	–	हाथी
भनभनाना	–	मच्छर
बलबलाना	–	ऊँट

क्रिया के संबंध में वाच्य

वाच्य – वाच्य क्रिया का रूपांतरण हैं, जिसके द्वारा यह पता चलता हैं कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता हैं।

वाच्य के भेद – वाच्य के **तीन भेद** होते हैं।

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता हैं, वह कर्तृवाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- राम ने खाना खाया।
- वह शहर गया।
- रमा हँसती हैं।

नोट – कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनता हैं।

2. कर्मवाच्य – वह वाच्य जिसमें कर्म की प्रधानता का बोध हो, कर्मवाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- गाना गाया गया।
- पेड़ काटा गया।
- पुस्तक लिखी गई।

नोट – कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से बनता हैं।

3. भाववाच्य – जिस वाक्य में भाव या क्रिया की प्रधानता हो, वह भाववाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- सुरेश से चला नहीं जाता।
- मुझसे दौड़ा नहीं जाता।
- कमला से हँसा नहीं जाता।

नोट – भाववाच्य अकर्मक क्रिया से बनता हैं।

वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता, कर्म, भाव का अनुसरण करने के कारण, वाच्य प्रयोग को **तीन भागों** में बाँटा गया हैं –

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणी प्रयोग
3. भावे प्रयोग

1. कर्तरि प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- राम आम खाता हैं।
- श्याम अखबार पढ़ता हैं।

2. कर्मणी प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणी प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- विमला ने किताब पढ़ी।
- मुकेश ने गीत गाया।
- लड़की द्वारा पत्र को पढ़ा गया।

3. भावे प्रयोग – जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो, तब भावे प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- कमल से दौड़ा नहीं जाता।
- सोनू से हँसा नहीं जाता।
- मुझसे रोया नहीं जाता।
- पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का षाब्दिक अर्थ – मनःस्थिति या मूड

क्रिया के जिस रूप द्वारा लेखक या वक्ता के उद्देश्य/मंतव्य, मनःस्थिति का पता चलता हैं, वह क्रिया वृत्ति कहलाता हैं।

वृत्ति के भेद – (7)

(i) संदेहार्थक वृत्ति – क्रिया के जिस रूप से लेखक के मन में उत्पन्न होने वाले संदेह/शंका का भाव प्रकट होता हैं, तो वह संदेहार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- संतोष गाँव पहुँच गई होगी।
- भावेश पत्र लिख रहा होगा।
- रमेश ने खाना खा लिया होगा।

(ii) संभावनार्थक वृत्ति – जिस वृत्ति से किसी क्रिया के भविष्य में हो सकने के बारे में पता चलता हैं, उसे संभावनार्थक वृत्ति कहते हैं।

जैसे –

- आप अच्छे वक्ता बन सकते हों।
- शायद कल बारिश आए।
- भारत–पाकिस्तान के बीच होने वाला क्रिकेट मैच रुक सकता हैं।
- पिताजी शाम को यहाँ आ सकते हैं।

(iii) आज्ञार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में आज्ञा/आदेश/आदेश, अनुरोध, निषेध, चेतावनी, प्रार्थना आदि का बोध हो, वह आज्ञार्थक वृत्ति कहलाता हैं।

जैसे –

- अजय तुम यहाँ से चले जाओ। (आज्ञा)
- रेखा इधर आओ। (आदेश)
- मेरा काम जरूर कर दीजिएगा। (अनुरोध)
- आप मुझे अपनी पुस्तक दे सकेंगे। (निवेदन)
- तुम जल्दी चले जाना नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी। (चेतावनी)

(iv) संकेतार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में संकेत के भाव प्रकट हो, तो वहाँ संकेतार्थक वृत्ति होगी।

जैसे –

- बारिश होगी तो हम भी पिकनिक पर चलेंगे।
- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।
- छुट्टी होती तो हम गाँव चले जाते।

(v) निश्चयार्थक वृत्ति – निश्चयार्थ वृत्ति में वक्ता की निश्चित भाव की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता हैं।

जैसे –

- मेरे पिताजी बहुत मेहनती हैं।
- उसने अपना कार्य कर लिया हैं।
- अब गाड़ी जा चुकी हैं।
- सोहन अच्छा वक्ता हैं।

(vi) इच्छार्थक वृत्ति – इस वृत्ति में वक्ता की इच्छा, वरदान, अभिशाप आदि का पता चलता हैं।

जैसे –

- आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- बेटे जल्दी ही तुम्हारी नौकरी लग जाए।
- भगवान तुम्हें नरक में डाले।
- भगवान सबका भला करे।

(vii) प्रश्नार्थक वृत्ति – जब वक्ता के मन में जिज्ञासा हो और वह उसको शांत करने के लिए प्रश्न करें तो वह प्रश्नार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- यह किताब कितने दिन में बन जायेगी।
- अब मुझे किस परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।
- आपका जन्मदिन कब हैं?
- आपका नाम क्या हैं?

क्रिया के पक्ष

पक्ष – हर कार्य किसी कालावधि के बीच होता हैं, जो आरंभ से लेकर अन्त तक फैला हुआ होता हैं। इस क्रिया

में क्रिया के घटित होने के विभिन्न पहलुओं, प्रतिक्रियाओं को देखना पक्ष कहलाता हैं।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता हैं, वह पक्ष कहलाता हैं।

पक्ष के भेद – पक्ष के मुख्यत 6 भेद होते हैं।

पक्ष के भेद

- आरम्भ बोधक पक्ष
- प्रगति बोधक पक्ष
- सातत्य बोधक पक्ष
- पूर्णता बोधक पक्ष
- नित्यता बोधक पक्ष
- आवृत्ति बोधक पक्ष

1. **आरम्भ बोधक पक्ष –** क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के आरम्भ होनें का बोध हों, वह आरम्भबोधक पक्ष कहलाता हैं।

   जैसे –
   - अतुल स्कूल जाने लगा हैं।
   - आजकल अवनी भी पढ़ने लगी हैं।
   - नवीन बोलने लगा हैं।
   - साक्षी पुस्तक पढ़ने लगी हैं।

2. **प्रगति बोधक पक्ष –** यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया में बढ़ोतरी या वृद्धि होने का भाव प्रकट हो तो वहाँ प्रगति बोधक पक्ष माना जाता हैं।

   जैसे –
   - रीतिका पुस्तक पढ़ती ही जा रही थी।
   - मेलें में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।
   - वर्षा होती ही जा रही थी।

3. **सातत्य बोधक पक्ष –** क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता हैं। यह निरंतरता वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल किसी में हो सकती हैं।

   जैसे –
   - शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे।
   - श्याम पुस्तक पढ़ रहा हैं।
   - मानसी लिख रही हैं।

4. **पूर्णता बोधक पक्ष –** क्रिया के जिस रूप द्वारा कार्य के पूर्ण हो जाने का बोध हो, वहाँ पूर्णता बोधक पक्ष माना हैं।

   जैसे –
   - स्नेहा स्नान कर चुकी हैं।
   - गाड़ी जा चुकी हैं।
   - निराला ने पुस्तक पढ़ ली हैं।

5. **नित्यता बोधक पक्ष –** क्रिया के जिस रूप द्वारा किसी कार्य के नित्य होने का बोध होता हैं, वहाँ नित्यता बोधक पक्ष माना जाता हैं। क्रिया पहले भी होती थी, अभी भी होती हैं और आगे भी होती रहेगा। **नित्यता बोधक पक्ष को अपूर्णता बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।**

   जैसे –
   - मेरे पिताजी किसान हैं।
   - सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता हैं।
   - सूर्यास्त के समय आसमान में लालिमा छा जाती हैं।

6. **आवृत्ति बोधक पक्ष –** जब किसी वाक्य में एक ही कार्य के बार–बार घटित होनें का बोध होता हैं तो वहाँ आवृत्ति बोधक पक्ष माना जाता हैं।

   जैसे –
   - डाकिया पत्रों का वितरण करता हैं।
   - आरती स्कूल जाती हैं। (रोजाना)
   - होली पर सब लोग घरों की सफाई करते हैं। (हर बार)

   नोट – आवृत्ति बोधक पक्ष को अभ्यास बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।

काल

काल

क्रिया के घटित होने वाले समय को काल कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में

- काल का अर्थ –'समय' है। क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय मालूम हो उसे काल कहते हैं। काल के इस रूप से क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता के साथ ही सम्पन्न होने का समय का बोध कराते हैं।
- काल के तीन भेद होते हैं–
  (i) भूतकाल
  (ii) वर्तमान काल
  (iii) भविष्यत् काल

भूतकाल

- भूतकाल का अर्थ है 'बीता हुआ समय' वाक्य में जिस क्रिया रूप से बीते का होना पाया जाता है वह भूतकाल कहलाता है। यह क्रिया व्यापार की समाप्ति बतलाने वाला रूप है।
- भूतकाल के सामान्यतः 6 उपभेद हैं –
  1. सामान्यतः भूतकाल
  2. संदिग्ध भूतकाल
  3. हेतुहेतुमद् भूतकाल
  4. आसन्न भूतकाल
  5. पूर्ण भूतकाल
  6. अपूर्ण भूतकाल

1. सामान्यतः भूतकाल

- अविनाश ने गाया।
- गाड़ी जा चुकी है।
- बच्चों ने पुस्तक पढ़ी।
- हमने एक बैल देखा।

पहचान – आ, ए, ई, या इत्यादि की मात्रा होगी।

2. संदिग्ध भूतकाल

- खाना नीता ने ही बनाया होगा।
- सोहन ने चोरी की होगी।

पहचान – ए होंगे, या होगा, ई होगी इत्यादि मात्रा।

3. हेतुहेतुमद् भूतकाल

- तुमने पढ़ाई की होती तो उत्तीर्ण हो जाते।

पहचान – शर्त होना

4. आसन्न भूतकाल

- राजकुमार हनुमानगढ़ गया है।
- अतुल ने खाना खाया है।

पहचान – या है, ई है आदि।

5. पूर्ण भूतकाल

- 1857 की क्रान्ति में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से लोहा लिया।
- राधा ने गाना गाया।

पहचान – या था, ई थी आदि।

6. अपूर्ण

- रोहन पुस्तक पढ़ता था।
- राजकुमार पुस्तक पढ़ता था।

पहचान – ता था, ती थी, ते थे आदि।

वर्तमान काल

- क्रिया का वह रूप जिससे कार्य का वर्तमान समय में होना ही वर्तमान काल कहलाता है।
- कार्य का निरंतर हो रहा है।
- वर्तमान काल को 5 उपभेदों में बाँटा गया है –
  1. सामान्यतः वर्तमान काल
  2. अपूर्ण वर्तमान काल
  3. संदिग्ध वर्तमान काल
  4. सम्भाव्य वर्तमान काल
  5. आज्ञार्थक वर्तमान काल

1. सामान्यतः वर्तमान काल

- राधा पूजा करती है।
- मानसी शोर करती है।

पहचान – ता है, ती है, ता हूँ आदि।

2. अपूर्ण वर्तमान काल

- अक्षय पंकज के साथ पढ़ रहा है।
- मोर छत पर नाच रहा है।

पहचान – रहा है, रही है, रहे है आदि।

3. संदिग्ध वर्तमान काल

- राजू हिन्दी पढ़ता होगा।
- राधा पढ़ती होगी।

पहचान – ता होगा, ती होगी, रहा होगा आदि।

4. सम्भाव्य वर्तमान

- शायद राजा पढ़ता हो।
- शायद कमलेश नोकर के साथ आया हो।

पहचान – ता हो, ती हो, ई हो आदि।

5. आज्ञार्थक वर्तमान काल

- राजकुमार अब तु क्रिकेट खेल।
- अतुल तुम भी पढ़ो।

पहचान – वर्तमान समय में आज्ञा देगा।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य आने वाले समय में होगा।

1. सामान्य भाविष्यत् काल
2. सम्भाव्य भविष्यत् काल
3. आज्ञार्थक भविष्यत् काल

1.सामान्य भविष्यत काल

- औरतें गीत गाएगी।
- अंकित पुस्तक पढ़ेगा।
- वह घर जाएगा।

पहचान – एगा, एगी, एंगे।

2. सम्भाव्य भविष्यत् काल

- अब वह क्या करें।
- वह शायद 'विद्यालय' जाए।

पहचान–ए, ऐ, ओ।

3. आज्ञार्थक भविष्यत् काल

- आप हमारे गाँव पधारिएगा।
- आप वहाँ अवश्य जाइएगा।

पहचान – इएगा।

अव्यय / अविकारी शब्द

परिभाषा

ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल, पुरुष, कारक आदि में कोई परिवर्तन नहीं होता है, वह अविकारी शब्द कहलाता है।

- अविकारी को अव्यय शब्द भी कहा जाता है।
- अविकारी शब्द का अर्थ – अपरिवर्तनशील
  अर्थात् – किसी भी परिस्थिति में जिन शब्दों में विकार उत्पन्न ना हो वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।
  जैसे – यहाँ, वहाँ, तेज, धीरे, आदि
- **अव्यय के भेद** – अव्यय के चार भेद हैं।
  1. क्रिया विशेषण अव्यय
  2. समुच्चय बोधक अव्यय
  3. संबंध बोधक अव्यय
  4. विस्मयादि बोधक अव्यय

1. क्रिया–विशेषण अव्यय

ऐसे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया से पहले प्रयुक्त क्रिया के घटने के समय / स्थान / तरीका / शैली को प्रकट करने वाले शब्द क्रिया–विशेषण कहलाते है।
जैसे – मुकेश पढ़ता है।
क्रिया विशेषण के भी चार उपभेद होते हैं।

(i) काल वाचक
(ii) स्थान वाचक
(iii) रीति वाचक
(iv) परिमाण वाचक

(i) काल वाचक – ऐसे शब्द जो क्रिया के घटित होने के स्थान को प्रकट करने वाले शब्द है।

जैसे – आज मैं दिल्ली जाऊँगा।
तुम शिमला कब जा रहे हो ?
आज मेरी परीक्षा है।

अन्य उदाहरण – जब, कब, अभी–अभी, पहले, बाद, कल।

पहचान – काल वाचक अव्यय 'कब' प्रश्न का उत्तर देता है।

जैसे – मेरा भाई कल अमेरिका जायेगा।
(प्रश्न – कब, उत्तर – कल)

समयवाचक – आज, कल, परसों, अभी, तुरन्त
अवधिवाचक – दिनभर, रातभर, आजकल, नित्य
बारंबारता वाचक – हर बार, कई बार, प्रतिदिन

(ii) स्थान वाचक – ऐसे अव्यय शब्द जिनसे क्रिया के घटित होने के स्थान को स्थान वाचक क्रिया–विशेषण कहलाता है।

जैसे – उपर, नीचे, पास, दूर, अन्दर, बाहर, सामने।
हमारे गाँव का खेल मैदान मंदिर के पास है।
पंकज यहाँ रहता है।

पहचान – स्थानवाचक अव्यय 'कहाँ' प्रश्न का उत्तर देता है।

जैसे – विकास जयपुर में रहता है।
(प्रश्न – कहाँ, उत्तर – जयपुर)

स्थितिवाचक – कहाँ, जहाँ, तहाँ, यहाँ, वहाँ, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, सामने, समीप, दूर, सर्वत्र
दिशावाचक – उधर, किधर, इधर, जिधर, दायें, बायें

(iii) परिमाण वाचक क्रिया–विशेषण–क्रिया के घटित होने की मात्रा को प्रकट करने वाले शब्द परिणाम वाचक क्रिया–विशेषण कहलाता है।

जैसे – कम, ज्यादा, थोड़ा, बहुत, कुछ, जितना, उतना, अधिक

जैसे – वह कम बोलता है।
जितना चाहे ले लो।
वह उतना ही भार उठा पाएगा।
नदी में पानी अधिक बह रहा है।

पहचान – परिणामवाचक अव्यय 'कितना' प्रश्न का उत्तर देता है।

जैसे – अनिता कुछ शरमाती है।
(प्रश्न – कितना, उत्तर – कुछ)

न्यूनता बोधक – जरा, थोड़ा, कुछ
अधिकता बोधक – बहुत, खूब, अत्यन्त, अति
तुलना बोधक – कम, अधिक, इतना, उतना
पर्याप्ति बोधक – काफी, बस, पर्याप्त, ठीक
श्रेणी बोधक – थोड़ा–थोड़ा, बारी–बारी, जरा – जरा

(iv) रीति वाचक क्रिया–विशेषण – ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की रीति को प्रकट करता है वह रीतिवाचक क्रिया–विशेषण कहलाता है।

जैसे – धीरे–धीरे, तेज, झटपट, मधुर, चुपके से।

- तुम बहुत धीरे–धीरे चलते हो।
- पंकज जरा तेज कदम चलाओ।
- हमें वहाँ झटपट पहुँचना है।

पहचान – रीतिवाचक अव्यय ''कैसे'' का उत्तर देता है।
जैसे – वह चुपके से निकल गया।
प्रश्न – कैसे, उत्तर – चुपके से

प्रकार बोधक – कैसे, वैसे, जैसे, धीरे, अचानक, सहसा, जैसे–तैसे, एकाएक, ध्यानपूर्वक, झट से, फटाफट, अकस्मात्।
निश्चय बोधक – जरूर, अवश्य, सचमुच, बेशक, वास्तव में, दरअसल।
अनिश्च बोधक – शायद, संभवत, शायद ही, यथा संभव।
निषेध बोधक – नहीं, मत, ना।
कारण बोधक – किसलिए, इसलिए, क्यों, अन्त।
अनुकरण बोधक – धड़ाधड, गटगट, सरसर, पटपट, तड़ातड़।
अवधारण बोधक – तो, ही, भी, तक, भर।

2. समुच्यबोधक अव्यय

ऐसे अव्यय शब्द जो एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ते है, उन्हें समुच्चय बोधक विशेषण कहते हैं।
जैसे एवं, अथवा, व, और, या, तथा, कि, जो, मानो, न कि, चाहे, पर, किन्तु, परन्तु, मगर, अर्थात्, यदि–तो, क्योंकि, इसलिए, फलस्वरूप, नही–तो, यदि समुच्चयबोधक अव्यय शब्द है।

- अजय पढ़ता है परन्तु संजय खेलता है।
- सूर्य निकला और पक्षी चहकने लगे।

समुच्चय बोधक दो प्रकार का होता है –

(i) समानाधिकरण समुच्चय बोधक – वाक्य को जोड़ने के लिए अकेला प्रयुक्त होने वाला शब्द समानाधिकरण समुच्चय बोधक कहलाता है।
जैसे – रेखा व अंजना खेलती हैं।
समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय का प्रयोग निम्न रूपों में देखने को मिलता है –

(a) विभाजक – यह वाक्य को दो भागों में विभाजित करता है।
पहचान – अथवा, या, कोई, ना, नहीं तो, कि आदि।
अजय बैठ जाओ या यहाँ से चले जाओ।
गाँधीजी ने कहा कि अहिंसा का साथ दो।

(b) संयोजक – ये अव्यय दो वाक्यों को आपस में जोड़ने का कार्य करते हैं।
पहचान –और, तथा, एवं
राम और श्याम दो भाई हैं।
सुरेश ने हाथी एवं घोड़े खरीदे।

(c) परिणाम दर्शक
पहचान – सो, अतएव
जैसे – वितुल ने तीन वर्ष तक लगातार कठिन परिश्रम किया अतएव वह अध्यापक बन गया।

(d) विरोध प्रदर्शन को दर्शाने वाले
पहचान – किन्तु, परन्तु, लेकिन, मगर, बल्कि, वरना, पर।
उदाहरण – संजीव दिल्ली जाना चाहता है, मगर राहुल का अड़ीयल रवैया उसके लिए बाधा बना हुआ है।

(ii) व्याधिकरण समुच्चय बोधक – ऐसे अव्यय जो एक मुख्य वाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य जोड़ते हैं, व्याधिकरण समुच्चय बोधक कहलाते हैं।
पहचान – क्योंकि, कारण, इसलिए, चूँकि।
जैसे – यदि प्रियंका तेज दौड़ती तो उसकी जीत निश्चित थी।

- जब तक रमेश स्टेशन पहुँचा तब तक गाड़ी जा चुकी थी।
- व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय की निम्न रूपों में पहचान की जाती है।

पहचान –
a. संकेतवाचक – जब–तब, यद्यपि–तथापि, यदि–तो
b. उद्देश्य वाचक – ताकि, जोकि
c. स्वरूप वाचक – जो, कि, मानो, अर्थात्
d. संकेत वाचक – जो–तो, यदि–तो, यद्यपि–तथापि, अगर–तो

3. संबंध बोधक अव्यय

– ऐसे अव्यय जो संज्ञा एवं सर्वनाम के बाद आकर वाक्य में दूसरे शब्दों से संबंध प्रस्तुत करते हैं। संबंध बोधक अव्यय कहलाते हैं।
जैसे – रमन का घर मंदिर के पास है।
(यहाँ रमन के घर का मंदिर से संबंध है।)
सुमन की बहिन कविता है।
नोट – संबंधवोचक अव्यय को परसर्गीय शब्द भी कहा जाता है।

संबंध बोधक अव्यय के भेद निम्न है –
स्थान वाचक – आगे, पीछे, पास, बाहर, भीतर, समीप, ऊपर।
नेताजी के आगे गाड़ियों की लम्बी कतार थी।